प्रथम अध्याय

आत्मकथा : संकल्पना और स्वरूप

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अनेक गद्य विधाओं का उद्‌य हुआ है, जिनमें उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृतांत, जीवनी, डायरी, आत्मकथा आदि विधाओं का उद्‌भव और विकास हुआ है। हिंदी में आत्मकथा का उद्‌भव बहुत विलंब से हुआ है।

आत्मकथा के स्वरूप-निर्धारण, सृजन-प्रक्रिया, तात्विक विश्लेषण, इतिहास आदि का अनुशीलन करने से पूर्व आत्मकथा शब्द की उत्पत्ति पर विचार कर उसकी परिभाषाओं को देख लेना आवश्यक है। जिनका विवरण निम्नप्रकार से दिया है।

***आत्मकथा : उत्पत्ति और अर्थ :**

आत्मकथा शब्द की ऊत्पत्ति संस्कृत के 'आत्मन और कथा' से हुई है। इसका मतलब यह है कि 'अपनी कहानी, अपने द्‌वारा कही या लिखी कहानी है।'

***आत्मकथा : परिभाषाएँ :**

भारतीय तथा पाश्चात्य विद्‌वानों ने आत्मकथा की परिभाषा देने का प्रयास किया है जो निम्नप्रकार स Æ...

अ) अंग्रेजी परिभाषाएँ

१) ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी :

"लेखक की अपने जीवन की स्वयं लिखी हुई कहानी आत्मकथा है।"

२) एच. जी. वेल्स के अनुसार :

"अपने ही जीवन की विवेचना और गुंत्थियाँ सुल–ÖÖÝÖ Æ£ए स्वान्तःसुखाय रचना करने को ६ आत्मकथा का नाम दिया है।"

²Ö) ØÆ¤üß ¯Öx¸ü³ÖÖÂÖÖ‹ :

१) डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत :

"आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं सबलताओं आदि का वह सन्तुलित और व्यवस्थित चित्रण है, जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन में समर्थ होता है"।

२) डॉ. नारायण शर्मा :

"आत्मकथा की सबसे आसान परिभाषा है 'स्व' के जीवन की कथा। वस्तुतः 'स्व' को किसी न किसी स्तर पर अभिव्यक्ति करने की इच्छा शाश्वत एवं विश्वजनीन है।"

३) सरोज जग्गी :

"आत्मकथा वस्तुतः किसी भी व्यक्ति द्वारा स्वयं लिखित अपने जीवन का इतिहास है। उसके 'स्व' की कहानी है, जहाँ वह अपने अन्तर्बाहय जीवन की सुंदर –ाँकी प्रस्तुत करता है"।

उपरोक्त परिभाषाओं को देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्मकथा का लेखक ही आत्मकथा का नायक होता है। आत्मकथा स्वयं लेखक के जीवन का इतिहास होता है… आत्मकथाकार आत्मकथा के द्वारा अपने मन-मस्तिष्क का प्रकाशन होता है। लेखक व्यक्तिगत अनुभवों का चित्रण करता है। लेखक अपने जीवन को परखकर व्याख्या प्रस्तुत करने की कोशिश करता है। आत्मकथाकार जीवन की ओर तटस्थ दृष्टि से देखने की कोशिश करता है। लेखक व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति यथार्थ, अनासक्त, स्पष्ट, निर्भीक, निष्पक्ष, निश्चल, सहज, स्वाभाविक भाव से करता है। आत्मकथा का सत्य ऐतिहासिक सत्य न होकर अनुभव गत सत्य

होता है। यह विधा व्यष्टि के द्वारा समाष्टि का चित्रण करनेवाली है। आत्मकथा लेखक की बाह्य जगत के प्रति मानसिक प्रक्रिया का कलात्मक रूप है। इसमें व्यक्तिगत अनुभवों, अनुभूतियों और संवेदनाओं का चित्रण किया जाता है।

***पर्यायवाची शब्द :**

आत्मकथा के लिए 'आत्मचरित्र, आत्मवृत्त, आत्मगाथा, स्वजीवन, अपनी कहानी, आपबीती, मेरी कहानी, मेरी जीवन यात्रा, मेरी आत्मकथा, आत्मविश्लेषण' आदि शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं। आत्मकथा के लिए अंग्रेजी में ऑटोबॉयोग्राफी, ऑटो फिक्शन आदि शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं।

***आत्मकथा के तत्त्व :**

आत्मकथा के तत्त्वों के बारे में विद्वानों में मतभिन्नता पाई जाती है परंतु समान्वित रूप से आत्मकथा के तत्त्व निम्नलिखित है, जिनका विवेचन किया जा रहा है।

१) कथावस्तु :

आत्मकथा का सबसे पहला और महत्त्वपुर्ण तत्त्व कथावस्तु है। आत्मकथा का वर्ण्य विषय स्वयं लेखक होता है। वह अपने व्यक्तित्त्व और निजी जीवन का क्रमबध्द इतिहास स्मृति के आधार पर चित्रित करता है। आत्मकथा में लेखक स्वयं नायक होता है इसके साथ ही अन्य पात्रों को भी चित्रित करता है। आत्मकथा लेखक अपने जन्म से या अपने पूर्व वंशजों का भी चित्रण करता है। वस्तुतः लेखक अपनी रूचि, आस्था, शक्ति, सुविधा के आधार पर वर्ण्य विषय के विस्तार के बारे में सोचता है। वह खुद निर्णय लेता है। आत्मकथाकार को स्वतंत्रता होती है कि वह अपनी आत्मकथा एक या अनेक भागों में लिख सकता है। आत्मकथा की सत्यकथक, वास्तविकता, स्मृति, अनुभव का महत्त्व, मौलिकता, स्वाभाविकता, कुतुहल एवं जि॒ज्ञासा, मनोरंजक, उदासत्ता,

वैयक्तिकता, समन्वय, सुसूत्रता, क्रमबध्दता आदि विशेषताएँ है। इनके कारण आत्मकथा श्रेष्ठ बन •ÖÖŸÖß Æü…

2) “Ö×¸¡Ö-चित्रण :

यह आत्मकथा दूसरा प्रधान तत्त्व है। आत्मकथा में नायक पात्र लेखक स्वयं होता है। उसका वर्णन ही आत्मकथा का वर्ण्य - विषय होता है। वह कथावस्तु के केंद्र मे ंहोता है। आत्मकथा की सारी घटनाएँ एवं पात्र उससे जुड़े होते है। मुख्य पात्र के कारण कथावस्तु को ग×ŸÖ मिलती है। आत्मकथा में गौण पात्रों का वर्णन आवश्यकता होने पर ही किया जाता है। इसमें नायक के व्यक्तिमत्व विकास तथा मानसिक द्वंद्व के साथ-साथ उसके अंतर्बाहय संघर्ष का चित्रण किया •ÖÖŸÖÖ Æü… ‡ÃÖ×»Ö< आत्मकथा में चरित्र-चित्रण को महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना गया है।

३) वातावरण :

आत्मकथा का वातावरण यह प्रमुख तत्त्वों में एक तत्त्व है। आत्मकथा में आत्मकथाकार की मनःस्थिति के प्रभाव-परिणाम का वर्णन किया जाता है। लेखक अपने अनुभवों, भावनाओं तथा संवेदनाओं का संप्रेषण करके आत्मकथा की निर्मिती करता है। उसके हेतु पूर्ति में बाह्य परिवेश सहायक सिध्द होता है। परिवेश के आधार पर ही लेखक अपनी याद को चित्रित करता है। लेखक भूतकालीन घअनाओं को वर्तमान संदर्भ देकर अतीत की घटनाओं का मूल्यांकन करता है। आत्मकथाकार भौगोलिक, प्राकृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, औद्योगिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक परिवेश का उस सीमा तक चित्रण करता है। जिस सीमा तक वह प्रभावित होता है। आत्मकथाकार अयथार्थ, अस्वाभाविक, प्रभावहीन परिवेश को दोष मानकर इससे दूर रहने की चेष्टा करतÖ Æü…

4) ³ÖÖÂÖÖ ¿Ö»ÖßÖ :

³ÖÖÂÖÖ-शैली आत्मकथा का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। भाषा शैली के द्वारा आत्मकथाकार के विचारों, भावों के सम्प्रेषण का माध्यम और पाठक का रचना से परिचित होने का साधन है।आत्मकथाकार जीवन के विविध क्षेत्रों और समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े हुए होने के कारण उनकी भाषा-शैली परिनिष्ठित, परिष्कृत, अलंकृत, गंभीर, प्रभावी एवं गौरवपूर्ण हो ऐसी उपेक्षा करना आवश्यक नहीं हैं। क्योंकि सभी आत्मकथाकार अनुभवी लेखक नहीं होते तथा हर लेखक की भाषा शैली अलग होती है। आत्मकथा की भाषा में सहजता, सरलता, स्वाभाविकता, गतिशीलता, विषयानुरूपता, दार्शनिकता, भावुकता, परिनिष्ठता, गंभीरता आदि विशेषताएँ होती है। आत्मकथा में उत्तम पुरूष शैली का प्रयोग किया जाता है। इसमें अधिकतर वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है।

५) उद्देश्य :-

हर रचना के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य होता है, निरूद्देश्य रचना नहीं होती। आत्मकथा की निर्मिती सोद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। लेखक कभी-कभी स्वयं आत्मकथा लेखन का उद्देश्य स्पष्ट करता है। आत्मकथा का उद्देश्य आत्मप्रकाशन, अनुभवों की अभिव्यक्ति, भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यंजना, आत्मप्रदर्शन, आत्मदोष दर्शन, प्रायश्चित, आत्मविश्लेषण, विचारों एवं पाठकाओं से पाठक को प्रभावित एवं प्रेरित कर एक रूप बनाना, लोकोपकार की भावना आदि। आत्मकथा की निर्मिती सहज-स्वाभाविक होनी चाहिए।

आत्मकथा के उद्दश्यों में आत्मकथाकार को आत्मवि-ापन, आत्मसमर्थन, आत्मश्लाघा, आत्मगुण प्रदर्शन, परनिन्दा की भावना, उपदेशात्मकता आदि दोषों से बचना चाहिए।

6) ÃÖ¾ÖÖ¤ü :

आत्मकथा का संवाद विशेष रूप से महत्तवपूर्ण तत्त्व माना गाया है। आत्मकथा के संवाद संक्षिप्त, चुस्त, सरल, भावपूर्ण, सार्थक, कथानुकूल, होने चाहिए तथा अनावश्यक संवाद ¤üÖÂÖ ÃÖ बचना आवश्यक है।

***आत्मकथा : प्रयोजन :**

साहित्य की सभी विधाएँ प्रयोजनमुक्त होती है। निष्प्रयोजन साहित्य नहीं लिखा जाता। आत्मकथा लेखन और पठन के प्रयोजन में अंतर होता है। अतः आत्मकथा के प्रमुखतः दो प्रयोजन माने गए है।

अ) लेखक निष्ठ प्रयोजन :

इसमें लेखक आत्मप्रकाशन की इच्छा से लेखन करता है। भ्रममूलक धारणाओं को समाप्त करना आवश्यक है। लेखक को अपने महत्त्व का प्रदर्शन करना चाहिए। लेखक अतीत की स्मृतियों के मध्य से गुजरना, सीख देना, -ान प्रचार, जीवन रहस्यों का उद्‌घाटन, आत्मदोष-दर्शन समकालीन इतिहास का परिचय देना, ऐतिहासिकता की रक्षा का करना, सृजन प्रक्रिया का परिचय देना, लोकापकार की भावना, खाली समय का सदुपयोग आदि प्रयोजनों की श्रेणी मे रखा जाता है।

ब) पाठक निष्ठ प्रयोजन :

आत्मकथाकार दूसरा मुख्य प्रयोजन पाठकनिष्ठ रहा है। आत्मकथ्ा की निर्मिती करते समय आत्मकथाकार को आकर्षण, जि-ासा, रसास्वादन, सत्य के प्रति लगाव, कौतुहल, सामान्य के प्रति आकर्षण, -ाँकने की मानसिकता, साहित्य अध्ययन में सहायता आदि को ध्यान में रखकर करना चाहिए। तभी सार्थक आत्मकथा बन जाती है।

व्दितीय अध्याय

"हिंदी आत्मकथा : उद्‌भव और विकास"

संसार का प्राय: सभी प्रकार के भाषाओ का साहित्य पद्य के रुप मे मिलता है। परंतु उसके बाद का साहित्य गद्य-पद्य के रुप में मिलता है। हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल में गद्य का रुप छुट फूट रुप में मिलता है और आगे भी मिलता रहेगा। आधुनिक काल में प्रारंभिक रुप में उपन्यास, कहानी, नाटक, तथा एकांकी आदि कथनपर गद्यविधाएँ मिलती है, परंतु बिसवीं सदी में रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, जीवनी, आत्मकथा का उद्‌भव और विकास कथेतर साहित्य का रहा है।

काल विभाजन :

ØÆ¤§ साहित्य आत्मकथा का उद्‌भव और विकास आधुनिक युग की महत्वपूर्ण देन है। आधुनिक युग की जिन परिस्थितियों के कारण हिंदी गद्य साहित्य के विकास को बल मिला, उनमें से अनेक परिस्थितीयो में आत्मकथा विकास को भी बल दिखा है।

हिंदी आत्मकथा साहित्य का विकास निम्न कालों में विभाजित कर दिया है।

1) प्रेमचंद पूर्ण युग - (आरंभ से लेकर १९३१ तक)

2) प्रेमचंद युग - (सन १९३२ से १९४६ तक)

3) स्वातंत्र्योत्तर युग - (सन १९४७ से १९८० तक)

4) अद्यतन युग - (सन १९८१ से आज तक)

उपरोक्त आत्मकथा साहित्य के काल विभाजन को देखते हुए उसे निम्न प्रकार से विश्लेषित किया जा रहा है।

1. प्रेमचंद पूर्व युग :

हिंदी साहित्य मे आत्मकथा उद्‌भव सन्‌ १६४१ ई. से माना जाता है क्योंकि इस वर्ष बनारसीदास की 'अर्धकथानक' आत्मकथा लिखी गई है। इसमें बनारसीदासजीने अपने ५५ वर्षो के अनुभवों को अभिव्यक्त किया है। इस आत्मकथा की पाण्डूलिपिया का पुर्नलेखन सन्‌ १८९१ तक अनेक जैन संस्थाओं में होता रहा। इसके अनेक लेखकों ने आदर्श आत्मकथा का लेखन किया है। इस काल के आत्मकथाकार अपने क्षेत्रों के अव्दितीय विभूतियाँ थे। इस काल के अधिकांश आत्मकथकार आर्य समाज से जुडे हुए थे। इस काल में मूल आत्मकथाएँ लिखी परंतु कुछ आत्मकथाएँ जिनका अनुवाद भी किया गया है। इस काल जिन आत्मकथाकारोंने आत्मकथाएँ लिखी है, उनका विवरण दिया जा ¸ÆÖ Æ...

सबसे पहले स्वामी दयानंद सरस्वती की 'पूना प्रवचन' नाम से आत्मकथा पत्रकारोंने लिपिबध्द की। इसका समय सन १८७५ इ. था। इसके पं. अंबिकादत्त व्यास की 'निजवृत्तांत' (१९०१), राधाचरण गोस्वामी कृत 'राधाचरन गोस्वामी का चरित्र' (१९०५), प्रताप नारायण मिश्र व्दारा लिखित 'जीवन वृत्तांत' (१९०६), सत्यानंद अग्निहोत्री की 'मु-ामे देव जीवन का विकास - भाग -१' (१९०९), बालमुकूंद गुप्ता की 'आत्मकथा निबंध' (१९१३), जगन्नाथदास रत्नावर की 'पद्यो में जीवन' (१९१५), लाला लजपतराय की 'मेरी जेल कहानी' (१९२१), लोकमान्य तिलक कृत 'तिलक जेल में' (१९२१), महात्मा गांधी की 'गांधी की जेल कथा' (१९२१), भाई परमानन्द की 'आप बीती' (१९२२), श्रीधर पाठक कृत 'स्वजीवनी' (१९२७), जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी की 'आत्म संस्मरण' (१९२७), वृंदावनलाल वर्मा की 'कुछ संस्मरण' (१९२९), इलाचंद्र जोशी की 'मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृति ' (१९२९), महावीर प्रसाद व्दिवेदी कृत 'अतीत स्मृति' (१९३०) आदि उल्लेखनीय आत्मकथाएँ हैं। यह काल आत्मकथा का बाल्यावस्था काल था। इसलिए आरंभिक युग में आत्मकथा साहित्य को जितना महत्व मिलना चाहिए था उतना नहीं मिला परंतु कालांतर में इस विधा का निश्चित रूप हुआ इसमे कोई दुमत नहीं है।

२) प्रेमचंद युग :

हिंदी आत्मकथा साहित्य के प्रेमचंदोर युग के बाद प्रेमचंद युग का प्रारंभ हो जाता है। इस काल को सन् १९३२ ई. से सन् १९४७ ई. तक माना गया है। सही अर्थो में आत्मकथा क्या होती है, इसकी पहचान इस काल से दिखाई देती है। इस काल मे अनेक कवि, लेखक राजनेता, समाजसेवक, क्रांतिकारी आदि ने आत्मकथाएँ लिखी जो, काफी लोकप्रिय हो चुकी हैं। जिनका विवरण निम्न प्रकार दिया गया है।

सबसे पहले प्रेमचंदजी ने 'जीवन सार' (१९३२) मे आत्मकथा लिखी है। इसके बाद जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथा' (१९३२), विनोद शंकर व्यास कृत 'मैं' (१९३२), श्रीमती यशोदा देवी की 'मेरा एक अनुभव' (१९३२) ,जैनेंद्र कृत 'कश्मीर प्रवास के दो अनुभव' (१९३२), धीरेंद्र वर्मा की 'मेरी डायरी के कुछ पृष्ठ' (१९३२),शिवरानी देवी कृत 'मेरी गिरफतारी ' (१९३२), गोपाल राम गहमरी की 'सत्य संस्मरण' (१९३२), शिवपूजन सहाय की 'मतवाला कैसा निकला' (१९३२), सुदर्शन कृत 'एक मित्र दो आकृति' (१९३२), राहुल सांकृत्यायन कृत 'नौ यात्रा कथाएँ' (१९३२), अम्बिका प्रसाद वाजपेयी की 'आत्मकथा' (१९३९) , कृष्णदत्त पालीवली कृत 'मेरी नाम कहानी' (१९३९), बालकृष्ण शर्मा नवीन की 'मेरी अपनी बात' (१९३९), शामसुंदर दास कृत 'मेरी आत्मकहानी' (१९४१), गुलाब राय की 'मेरी असफलताएँ' (१९४२) , नारायण स्वामी की 'आत्मकथा' (१९४३) , चंद्रभूषण वैश्य की 'अपनी बाते' (१९४५), राहूल सांस्कृत्यायन कृत 'मेरी जीवन यात्रा भाग- १' (१९४६), आदि श्रेष्ठ आत्मकथाएँ लिखी गई, जो काफी लोकप्रिय हो गई है।

३) स्वातंत्र्योत्तर युग :

यह काल आत्मकथा साहित्य के लिए बहुत क्रांतिकारी रहा है क्योंकि इस काल में लेखन, प्रकाशन, प्रचार, लोकप्रियता की दृष्टि से आत्मकथा साहित्य अपने पूर्ववर्ती कालों से काफी विकसित हो गया है। इसका विकास तेज गति से हुआ है।

इस काल में आत्मकथा साहित्य संख्यात्मक और गुणात्मक दृष्टि से भी विशिष्ट रहा है। विविधता, गतिमयता, व्यापकता, विश्लेषणात्मकता आदि इस युग के आत्मकथा साहित्य के शैली की विशेषताएँ हैं। आजादी के बाद मौलिक आत्मकथाएँ लिखी गई परंतु इसके साथ-साथ भारतीय तथा पाश्चात्य भाषाओ से हिंदी मे आत्मकथाएँ अनूदित हो गई हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल की प्रमुख विशेषता यह रही है कि इस काल मे महिलाओं की आत्मकथाओं का विशेष योगदान रहा है। जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरूष के साथ आगे बढने वाली और कई क्षेत्रो में पुरूष को भी पिछे छोडनेवाली आज की नारी आत्मकथा के क्षेत्र में भी अपनी विशेष भूमिका निभा रही है। प्रस्तुत लघु शोध परियोजना महिला आत्मकथाकारों के अध्ययन विषय से संबंधित होने के कारण महिला आत्मकथाकारों विशेष अध्ययन किया जा रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में सबसे पहले डॉ राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखित 'आत्मकथा' (१९४७) नाम से आत्मकथा प्रकाशित हो गई। इसके आत्मकथा लिखने का सिलसिला आज तक जारß Æ †Ö¸ आगे भी रहेगा। इनमे वियोगी हरि 'मेरी जीवन यात्रा-भाग २' (१९४८), 'विनोदशंकर व्यास कृत '^»Ö–ी स्मृतियाँ' (१९५०), यशपाल की 'सिंहावलोकन भाग -१' (१९५१) , सकलनारायण शर्मा की 'आत्मकथा' (१९५१) , जैनेंद्र कृत 'आत्मकथा' (१९५२), शंतिप्रिय व्दिवेदी की 'परिव्राजक की प्रद्या' (१९५२) , यशपाल कृत 'सिंहावलोन भाग -२' (१९५२) , देवेंद्र सत्यार्थी की ' चांद सूरज के वीरन' (१९५२), महावीर प्रसाद व्दिवेदी की 'जीवन गाथा' (१९५२), रामचंद्र शुक्ल कृत 'आत्मसंस्मरण' (१९५२), इंद्र विदयावाचस्पति की 'पत्रकार जीवन के ३२ वर्ष' (१९५२), उदयशंकर भट्ट कृत 'मेरी रचना के स्त्रोत' (१९५२), उपेंद्रनाथ अश्क की 'मेरे प्रथम प्रयास' (१९५२) , गुलाबराय की 'मै और मेरी कृतियॉं' (१९५२), जैनेंद्रकुमार कृत 'अपनी कैफियत'(१९५२),राजकुमार वर्मा कृत 'मेरे जीवन के कुछ चित्र' (१९५२) , महादेवी वर्मा की 'अपने संबंध में' (१९५२), मैथिलीशरण गुप्त कáŸÖ 'कविता के पथ पर' (१९५२), देवेंद्र सत्यार्थी की ' चांद सूरज के वीरान' (१९५३), श्री रामनरेश त्रिपाठी कृत 'कलाकार के आत्मसंस्मरण' (१९५६), श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र की 'कलाकार के

आत्मसंस्मरण' (१९५६), रामेष्वर शुक्ल अंचल की 'कलाकार के आत्मसंस्मरण' (१९५६), सेठ गोविंददास की 'आत्म निरीक्षण भाग -२' (१९५८), डॉ. देवराज की 'बचपन के दो दिन' (१९५८), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की 'मेरी अपनी कथा' (१९५९), पांडेय बेचेन शर्मा उग्र कृत 'अपनी खबर' (१९६०) , शिवपूजन सहाय की 'मेरा बचपन', सुमित्रानंदन पंत कृत 'साठ वर्ष : एक रेखांकन' (१९६०), राहुल सांकृत्यायन 'मेरी जीवन यात्रा भाग -३' (१९६७) , भाग-4 (1967), भाग-5 (१९६७) , हरीवंशराय बच्चन 'क्या भूलू क्या याद करुँ' (१९६९) 'नीड का निर्माण फिर' (१९७०), मोहन राकेश कृत 'आत्मकथा' (१९७३), पृथ्वीराज कपूर 'कुछ यादे' (१९७४), बलराज साहनी कृत 'मेरी फिल्मी आत्मकथा' (१९७४), हरीवंशराय बच्चन की 'बसेरे से दूर' (१९७७), रामदरश मिश्र की 'जहाँ मै खडा हुँ' (१९८४), 'रोशनी की पगडंडियाँ' (१९८६), अमृतलाल नागर की 'टुकडे टुकडे दास्तान', रामदरश मिश्र की 'टूटते बनते दिन' (१९९०), हरिवंशराय बच्चन की 'दस व्दार से सोपान तक' (१९९२), मोहनदास नैमिशराय की 'अपने अपने पिंजरे' (१९९६), डॉ. रामविलास शर्मा की 'अपनी धरती अपने लोग' (१९९६), कुसूम अंसल की 'जो कहा नहीं गया' (१९९६), ओमप्रकाश वाल्मिकी कृत 'जूठन' (१९९७), पद्मा सचदेव की 'बूँद बावडी' (१९९९), मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' (२००२), रमणिका गुप्ता की 'हाद से ' (२००५), सुशील राय की 'एक अनपढ कहानी ' (२००५), प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' (२००७), मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी ' (२००७) , मैत्रेयी पुष्पा कृत 'गुडिया भीतर गुडिया' (२००८), कौशल्या बैसंत्री कृत 'दोहरा अभिशाप' (२००८), कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है मेरा दिल' (२०१०) आदि आत्मकथाएँ उल्लेखनीय हैं।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिंदी आत्मकथा साहित्य को एक नई दृष्टि तथा नई दिशा मिल गई है।

तृतीय अध्याय

'नारी विमर्शः संकल्पना और स्वरूप'

नारी विमर्श आज साहित्य और समीक्षा में प्राधान्य पाते जा रहे हैं। यह नारी चेतनाओं को जगाने का परिणाम है। नारीवाद एक विशिष्ट मतवाद है जो इस सिध्दांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरूष शासित समाज में निम्न स्थान दिया गया है और उनको पुरूषों के साथ समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। अन्य शब्दों में नारीवाद उस प्रवृत्ति का द्योतक है जो लिंग पर †Ö¬ÖÖx¸ÖŸÖ ¯ÖÖ¸म्पारिक शक्ति बुध्दिजीवी और लेखिका मेरी वोल्सटोन क्राफ्ट ने एक पुस्तक में नारी के अधिकारों एवं स्वतंत्र निर्णय लेने के संबंध में अपने वैयक्तिक विचार रखे थे। उसने स्त्रियों के लिए वैवाहिक जीवन के विकल्प की संभावना की ओर भी संकेत किया था। तब से नारी की दशा उसकी निम्न स्थिति और उसकी समस्याओं पर विचार-विमर्श का सिलसिला शुरू हो गया। १९ वी शती में स्त्रियों को पुरूषों के समान मताधिकार प्राप्ति की मांग तीव्र हो गई।

वीसवीं शती में द्वितीय महायुध्द के बाद पश्चिम में स्त्रियां घर देहरी पार-कर बाहर कामकाज करने जाने लगी और फलास्वरूप नारी-स्वातंत्र्य के विचार गतिशील हो गए। एन १९४9 में सीमोन द बोडवार की पुस्तक 'द सेकन्ड सेक्स' प्रकाशित हुई जिसने नारीवादी विचारधारा को गति प्रदान की। नारी मुक्ति की चेतना को विश्वव्यापी धरापल पर जगाने, बढाने एवं सक्रिय करने ´Ö ‡ÃÖ ग्रंथ का असाधारण महत्त्व है। नारीवादी आन्दोलन ने सामाजिक और अर्थनैतिक क्षेत्रों के साथ ही सौंदर्यशास्त्र को भी प्रभावित किया। नारीवादी साहित्यालोचना की धारा को जन्म दिया। इस आन्दोलन ने अब तक के लिखे साहित्य को अधूरा घोषित किया क्योंकि उसमें नारी की छवि पुरूष शासित समाज के नियमों से प्रेरित व नियंत्रित है। नारी वहाँ गुलाम है, परतंत्रता के बंधनÖ ´Ö जकडी हुई है। नारीवादी आलोचना को यह प्रयत्न है कि वे संस्कृति एवं समाज द्वारा गठित मनोवृत्ति को पूरी तरह उद्घाटित करें, जिसने स्त्रियों और पुरूषों में असमानता को जन्म दिया।

साहित्य के अध्ययन-विवेचन में पितृसत्ता पर प्रहार करने के लिए इसी को उन्होंने परिसंवाद का विषय बनाया।

पितृसत्तात्मक समाज के मूल्यों ने नारी को एक विशेष साँचे मे ढाला और साहित्य में वही छवि चित्रित हुइ है। नारी को बचपन से ही उसी छवि को आदर्श मानकर चलने की शिक्षा दी गई। इसके विपरित मातृसत्तात्मक समाजों में स्त्रियों पूरी तरी से स्वच्छंद स्वतंत्र थी उन्हें अपने दैहिक प्रश्नों पर खुद विचार करना होता था कि उन्हें किससे संबंध बनाने हैं, किससे नहीं। प्रेम, सेक्स, नैतिकता, मर्यादा के प्रश्न पहले, इस तरह के नहीं थे, लेकिन जब पुरूषों ने मातृसत्तात्मक समाजों को पराजित करके स्त्रियों पर अपनी वर्चस्व स्थापित कर लिया तो उनकी देह भी उनकी नीजी मिल्कियत हो गई। वही पुरूषों के तंत्र के अधीन हो गई। वह पुरूष निर्मित मर्यादाओं, नैतिकताओं, अनुशासन का अनुसरण करने के लिए बाध्य हो गई।

धर्म, समाज और साहित्य में नारी को विविध रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। कभी वह पुरूषों की अनुगामिनी और पवित्रता की मूर्ति बताई गई, तो कभी अबला और त्याग की मूर्ति और कभी आवेगमयी और चंचला जो तर्क के बंधन को नहीं मानती। इसके विपरीत पुरूष को सदा शौर्य एवं वीर्य का प्रतीक और तर्क और न्याय के साथ-साथ मर्यादा का पुजारी माना जाता है। ये व्याख्याएँ लिंगधारित हैं। नारीवाद इस लैंगिक परिभाषा का तीव्र विरोधी है। नारीवाद इस लैंगिक परिभाषा में बंधी नारी कमजोर पड जाती है। और पुरूष बाजी मार` जाता है। नारीवादी लेखिकाएँ और समीक्षक पितृसत्तात्मक मूल्यों एवं अवधारणाओं को खंडित करने के लिए कटिबध्द है। हिंदी साहित्य में यह विचारधारा धीरे-¬Öß¸¡ ÃÖ²Ö»Ö ÆÖŸÖß •ÖÖ ¸¡Æß Æ…

भक्तिकाल के निर्गुण-सगुण भक्ति-साहित्य में महाकवि कबीर तथा संत तुलसी जी ने नारी के बारे में निंदा प्रकट की है, उसे आज की सचेत नारी कभी स्वीकार नही करती। इन कवियों का मानना है कि आजादी नारियों को बिगाड़ती है। सचेत नारी का मानना है कि किस प्रकार कबीर

तथा तुलसी जैसे मानवीय संवेदनशील कवितयों ने पितृसत्तात्मक वर्चस्व से मुक्त नहीं है। उनमें नारी के बारे में किसी न किसी रूप में असंवेदनशीलता और तिरस्कार पूर्ण विचार दिखाई देता है।

स्वतंत्रता के पूर्व कवियत्री महादेवी वर्मा जी ने 'श्रृंखला की कडियाँ' नामक संग्रह में नारी की दयनीय दिशा को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उसमें नारी को पैतृक व्यवस्था के पिंजरे को तोड़कर आजादी की वकालत की है। दुर्भाग्य से बाद की लेखिकाओं ने उनसे जरूर प्रेरणा ली परंतु उस कार्य को आगे नहीं बढ़ाया। पहले प्रकार की लेखिका की परम्परागत छवि उभरी हुई दिखाई देती है परंतु दूसरे प्रकार की महिला कथा लेखिकाआँ ने नारी आंदोलन को सही मायने में रचनाओं में चित्रित करके नारी को मुक्त करने की कोशिश गई है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग रहकर पुरातन जर्जर मूल्यों से उसकी मुक्ति करने की बात करती है। इनमें कृष्ण सोबती, ˆÂ´Ö ×¯्रयवंदा, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, ममता का लिया, कुसुम असल, सुशिला टाकभोरे, रमणिका गुप्ता, प्रभा खेतान, डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, कृष्ण अग्निहोत्री आदि लेखिकाओं ने नारी की स्वाभाविक प्रकृति को चित्रित करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय

महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं का सामान्य परिचय

आजादी के बाद हिंदी की लेखिकाओं ने आत्मकथाएँ लिखने प्रारंभ किया। इस कारण आत्मकथा साहित्य चरमोत्मकर्ष पर पहुँच गया है। इनमें प्रतिभा अग्रवाल, कुसुम अंसल, चंद्रकिरण सौनरेक्सा, कृष्णा अग्निहोत्री, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा तथा सुशीला टाकभौंरे का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इन लेखिकाओं की आत्मकथाओं का सामान्य परिचय निम्नांकित रूप में दिया जा रहा है।

हिंदी साहित्य में डॉ. प्रतिभा अग्रवाल का विशेष रूप से नाम लिया जाता है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की दो भागों में आत्मकथा लिखी है। प्रथम भाग 'दस्तक जिंदगी की' है, जो सन १९९० में प्रकाशित हुआ है। इसमें अपने परिवार की तथा उस परिवारों से जुडे लोगों का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साथ ही इस आत्मकथा में बनारस से ब्याह होकर मदन बाबू के साथ कलकता आने तक का विवरण प्रस्तुत किया है। दूसरा भाग 'मोड जिंदगी का' प्रकाशित हुआ। इस भाग का सन १९९६ में प्रकाशन हुआ है। इसमें लेखिकाने कलकता आने के बाद अपने पारिवारिक जीवन के सुख दुख के साथ हिंदी तथा बंगला रंगमंच से जुड़े महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के योगदान का तटस्थ रूप से चित्रित किया है। इन भागों में ६ वर्षों का अंतर है। यह आत्मकथा उल्लेखनीय रही है। यह सिर्फ आत्मकथा नहीं है बल्कि रंगमंच का इतिहास और नाट्यशास्त्र भी है।

ÃÖŠोत्तर हिंदी लेखिकाओं में कुसुम अंसल का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। उन्होंने 'जो कहा नहीं गया' आत्मकथा लिखी, जो सन १९९६ में प्रकाशित हो गई है। इसमें अपने परिवार के सदस्यों किसी भी प्रकार की सहायता नहीं मिली परंतु उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर प्रतिकूल परिस्थितियों में कलाकार अपना विकास किस प्रकार कर सकता है, इसका अंकन किया

है। इस आत्मकथा में आसक्ति-विरक्ति का छाप छांही खेल दिखाई पड़ता है। अलीगढ़ के अमीर घर में एकलौती बेटी को 'अनाथ बालिका' की तरह पाला जाता है और उसे संतानहीन दम्पति की गोद लेने के रूप में 'डोनेट' कर दिया जाता है। संतान के रूप में बालिका का स्थान नीचे है, इस धारणावाले समाज की माया ही अपना मकड़जाल फैलाए हुए दिखाई पड़ती है।

हिंदी आत्मकथा साहित्य में आजादी के बाद जिन लेखिकाओं में साहित्य सृजन किया उनमें चंद्रकिरण सौनरेक्सा का नाम लिया जाता है। इन्होंने अपने अमरीका निवासी बेटे कार्तिकेय के आग्रह पर 'पिंजरे की मैना' नाम से आत्मकथा लिखी। यह आत्मकथा सन २००८ में प्रकाशित हो चुकी है। इसमें लेखिकाने अपनी वंश-परम्परा एवं पूर्वजों का परिचय दिया है। समाज के सारे दूषण विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से दर्शाए गए है। तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय थी। लडकियों को लडकों की तुलना में हिन समझा जाता है तथा उसे पढ़ाने नहीं चाहते थे। लेखिका ने उन विभिन्न घटनाओं एवं प्रसंगों का जिक्र किया है, जिसके आधार पर उन्होंने अपनी कहानियों को उजागर करने का प्रयास किया है। यह आत्मकथा महिला आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में शीर्ष स्थान की अधिकारी है।

साठोत्तरी हिंदी आत्मकथा में कथा लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इनकी 'लगता नहीं दिल मेरा' नाम से सन् १९९७ में आत्मकथा प्रकाशित हो चुकी है। यह आत्मकथा पुरूष निर्मित पितृसत्तात्मक नैतिक प्रतिमानों की धज्जियां उड़ाकर रेख देती है। लेखिकाने एक ऐसे समाज में आँखे खोली जहाँ पुत्र के सामने पुत्री कुछ नहीं थी। उसके जन्म पर माता पिता निराश हो जाते हैं। छोटे और बड़े में कोई तालमेल नहीं है। उनकी इच्छाओं और भावनाओं को जानने की कोई कोशिश नहीं करता है। उन पर कडक नियम लागू किये जाते हैं। इस दम घोंटू जिंदगी का विवरण प्रस्तुत किया है। इसके बाद लेखिकाने 'और....और....औरत' नाम से आत्मकथा का दूसरा भाग लिखा, जो सन २०१० में प्रकाशित हो चुका है। इसमें लेखिकाने सिर्फ केवल रहस्य या अश्लील प्रेम कथाएं लिखी नहीं,वहाँ रोज मर्रा की लड़ाई को अभिव्यक्त किया है। सिर्फ जीवन में

रोमांस ही सब कुछ नहीं है। अर्थ, संयम, दैनंदिन की अनिवार्य आवश्यकताओं का भी उल्लेखनीय माना जाता है।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी कथा क्षेत्र में मन्नू भंडारी सर्वश्रेष्ठ लेखिकाओं में से एक लेखिका है। इन्होंने 'एक कहानी यह भी' नाम से आत्मकथा लिखी, जो सन् २००६ में प्रकाशित हो चुकी है। इसमें लेखिका ने अपने बचपन से लेकर पति के साथ बिताए हुए जीवन को उभारने का प्रयास किया है। लेखिकाने अपने जीवन के सभी बातें खोलकर नहीं रखी है। कोई भी उनसे ऐसा करने का आग्रह नहीं कर सकता। इस दृष्टि से यह आत्मकथा उल्लेखनीय है।

^¯ीन्यास लेखिका प्रभा खेताब ने अपने जीवन की 'अन्या से अनन्या' नाम से आत्मकथा लिखी, जो सन् २००७ में प्रकाशित हो चुकी है। कलकत्ते के व्यापारिक दृष्टि से संपन्न सम–ी जानेवाले खेतान परिवार में जन्म लेकर प्रभा ने अपने जीवन में बहुत बड़ी भूल की अपने आयु में दुगुने विवाहित पुरूष से प्रेम करती है। उस परिवार के साथ आए हुए संबंध को उजागर करने का प्रयास किया है। इसमें लेखिका की नियति का इतिवृत्त भले ही हो, भारतीय नारी की दशा दिशा का दर्पण तो यह निश्चित है।

कथा लेखिका और उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन को दो भाग में चित्रण किया है। प्रथम खंड 'कस्तूरी कुंडल बसै' सन् २००२ में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखिका ने बुंदेलखंडी बोली बनी का ग्रामीण लहजा को विशिष्ट रूप से पठ़नीय बनाता है। इसमें लेखिका ने माँ कस्तूरी के विचारों तथा उनके समाज के साथ आए संबंधो चित्रित किया है। दूसरा भाग 'गुड़िया भीतर गुड़िया' नाम से सन् २००८ में प्रकाशित हुआ है। इसमें एकनारी के अंदर दो नारियाँ किस प्रकार वर्तमान रहती है, यह चित्रित करने का प्रयास किया गया है। इस आत्मकथा से यह स्पष्ट होता है कि लेखिका पर कबीर और निर्गुणधारा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। लेखिका की रचनात्मक लेखन ही नहीं गृहस्थ जीवन के संतुलन में भी सक्रिय दिखाई देती है।

इक्कीसवीं शतीं में सुशीला टाकभौंरे ऐसी लेखिका है जिन्होंने अपना विशेष स्थान पाया है। लेखिका ने 'शिकंजे का दर्द' नाम से आत्मकथा लिखी है, जो सन् २०१० में प्रकाशित हुई है। लेखिका इसमें एक दलित नारी की दारूण यातना की कहानी ही नहीं कहती, उस वर्ण-व्यवस्था के अमानवीय स्वरूप के रेशे रेशे से पाठकों को परिचित कराती है, जिसने करोडों इंसानों की जिंदगी ´ी जिंदगी गोल रखा है। इसमें लेखिका ने भंगी का वर्णन किया है। साथ ही अपने बाल्यावस्था से लेकर पति के साथ बिताए हुए जीवन को उभारने का प्रयास किया है। भंगी समाज का सुधार 'वाल्मीकी' की पूजा करने या गांधीवाद की माला जपने से संभव नहीं है। इसके लिए उन्हें आंबेडकर द्वारा बताए गए मार्ग शिक्षा, संघर्ष एकता पर चलना होगा। यह आत्मकथा दलित नारी का शोषण मुक्ति की संघर्ष गाथा है, महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता कि हिंदी लेखिकाओं ने आजादी के बाद हिंदी साहित्य में आत्मकथा विधा को शीर्षस्थ स्थान पर बिठाया है। इस विधा ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा तथा दृष्टि देने का प्रयास किया है।

पंचम अध्याय

हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाओं नारी विमर्श

संसार के सुचारू संचलन के लिए प्रकृति ने नर-नारी का निर्माण किया है। नर नारी के संसार की निरंतरता, विकास, मानक की निर्मिती असंभव है। दोनों के विना संसार परिवÖ¸¡ †Ö¸¡ मनुष्य जीवन अधूरा और खाली है। दोनों का अस्तित्व एक दूसरे की अनिवार्य शर्त है। हमारी धार्मिक मान्याता भी दोनों के सह अस्तित्व आवश्यक मानती है। हमारी धार्मिक मान्यता है कि अर्धनारीश्वर रुप का स्थान पूजनीय एवं वंदनीय माना जाता है। पारिवारीक और सामाजिक जीवन में भी नर नारी का स्थान समान एवं महत्वपूर्ण है। दोनों में से किसी एक से जीवन नहीं बनता। सृष्टि के विकास में दोनों की भूमिका परस्पर पूरक एवं आवश्यक है। भारतीय समाज व्यवस्था ने नारी के महत्व को स्वीकारते हुए उसे 'जगत जननी', 'गृहलक्ष्मी', 'मातृदेवी भव' कहकर गौरवपूर्ण पर प्रतिष्ठित किया है। नारी विमर्श के अध्ययन में नारी की विमर्श के अध्ययन में नारी की विभिन्न युगों मे क्या स्थिती थी? मानव सभ्यता और विकास में नारी की भूमिका एवं योगदान क्या रहा है? इस काफी विचार विमर्श किया गया है और किया •ÖÖ ¸¡Æ¡Ö Æ¡…

हिंदी लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में नारी के विविध रुपो चित्रित करेन का प्रयास किया है। स्वयं के अनुभव को यथार्थ रुप में अभिव्यक्त किया गया है। अतः नारी जीवन के विविध पहलु पर निम्नांकित रुप में प्रकाश डाला जा रहा है।

***सफल दाम्पत्य जीवन :**

¯ÖxÖŸÖ-पत्नी पारिवारिक जीवन का मूलाधर है। दोनों के सहयोग परिवार की प्रगति होती है। दोनों अलग-अलग वंशों,परिवारों, संस्कारों से एकत्र आकर दाम्पत्य जीवन की स्थापना करते है। इस दृष्टि से कौशल्या बैसंत्री (दोहरा अभिशाप)के माँ बाप गरीब थे। परंतु दोनों में आपसी समन्वयÖ

होने के कारण वे अपनी गरीबी में बच्चो को अच्छी शिक्षा दे सके। दोनों में अच्छा तालमेल होने के कारण वे सभी निर्णय एक दूसरे की राय जानकर विचार विमर्श से करते है।

***पत्नी का त्याग एवं समर्पण :**

भारतीय समाज जीवन मे पति को परमेश्वर मानकर उसकी सेवा में श्रध्दापूर्वक जीवनयापन करने वाली नारी त्याग, सेवा, प्रेम, ममता की अखंड सरिता है। प्राय: आत्मकथाकारोंने नारी के त्याग एवं समर्पन के गौरवशाली रुप का चित्रण किया है। इस दृष्टि से क#Áणा अग्निहोत्री की 'लगता नही है दिल मेरा' आत्मकथा उल्लेखनिय है। इसमें पतिव्रता धर्म निभाने के लिए अग्निहोत्री से पहले खाना नही खाती थी। इतना ही नहीं उनके पति को पत्नी छोडकर प्रत्येक लडकी सुंदर अच्छी लगती थी। वे सबके सामने आदर्श पुरूष बन जाने का प्रयास करते थे। उनकी स्त्री लंपट दृष्टि अत्याचारी, मनोवृत्ती , भोगवादी मानसिकता को –Ö»ÖŸÖß Æ‡ लेखिकाने अपनी साहित्यिक जीवन केा सुरक्षित रखने की कोशिश करती है।

***आर्थिक उत्पादन की साथी :**

तन मन से पति का साथ देनेवाली नारी परिवारिक अर्थाभाव को दूर करने की कोशिश करती है। वह आर्थिक उत्पादन में सहयोग देकर परिवार को आर्थिक दुरावस्था दूर करने की कोशिश करती है। नारी भी अपनी योग्यता, अस्मिता, शक्ति सिध्द करने के लिए परिवार के अर्थिक उत्पादन में अपनी हिस्सेदारी पूर्ण कर रही है। इस दृष्टि से कौशल्या बैसंत्री 'दोÆ¸Ö अभिशाप' आत्मकथा महत्वपूर्ण है। लेखिका की माँ पति का साथ देती हुई मिल में काम करती है। वह पति के प्रत्येक निर्णय कार्य दिल से सम्मिलीत होती है। उसका पति भ्ी पत्नी की इच्छा - विचारों का सम्मान करता है।

***प्रेम स्वीकारने का साहस :**

प्रेम भावना मनुष्य की कोमलतम रागात्मक भावना है। नारी प्रेम की प्रतिमुर्ति मानी जाती है। नारी पुरूष प्रेम संबंध श्रेष्ठ मानविय संबध माने जाते है।इस दृष्टि से प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा सर्वश्रेष्ठ है। लेखिका ने २२ साल के उम्र में ४० के विवाहित डॉक्टर से प्रेम किया था। वह अपने प्रेम संबंध को स्वीकारते हुए डर या शर्म अनुभव नही करती थी...

पुरूष की लोलुपता के कारण पति-पत्नि में –गडे निर्माण होकर पारिवारिक शांति नष्ट होती है। पति की भोग तृप्ति करना पत्नी का कर्तव्य माना जाता रहा है। अतः वह अनचाहे पति की घरवाली बनकर बलात्कार और वासना का शिकार बनती है।कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नही है दिल मेरा' आत्मकथा उत्कृष्ठ है। उसका पति पद का दुरूपयोग कर अनेक औरतों के साथ काम संबंध स्थापित करने की कोशिश करता है।उसे पत्नी छोडकर सारी लडकियाँ सुंदर अच्छी लगती है। वह उन लडकियों के सामने आदर्श पुरूष बनने का प्रयास करता हे।

***स्वार्थी मनोवृत्ती :**

परिवार के सदस्यों को स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण x¸¿ŸÖ-नाते खोखले बनते जा रहे हैं। परिणामतः_पारिवारिक जीवन में स्वार्थ लोलुपता, धन लिप्सा, संदेह की स्थिती उत्पन्न होकर दुःख , निराशा बढ रही है। कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नही है दिल मेरा' आत्मकथा उल्लेखनीय है।उसका पति पत्नी पर अत्याचार करता है। यह पत्नी को लांछित,अपमानित, प्रताडित करते हुए उसे भोगने में विश्वास रखता है।

***नारी शोषण :**

पुरूष पिट्टू समाज में नारी शोषण का कार्य अनवरत रुप मे किया जाता है। परम्परागत पारिवारीक जीवन में नारी को बंधनों में जकडकर जुल्म का शिकार बनाया जाता है। उस पर अमानवीय अत्याचार ढाए जाते है।पुरूष अपने सारे काम औरत से करवाता है, जैसे खाना पकाना,

खाना परोसना, नहाने के पानी देना, बाथरुम मे कपडे रखना, यहाँ तक की पाखने में बाल्टी भर कर रखना आदि इस गुलामी का कौशल्या बैसंत्री विरोध करती है। कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं दिल मेरा' आत्मकथा का उदाहरण ले सकता है। उसका पति पत्नी के तन मन का शोषण करता है। उसकी दृष्टि में पत्नी केवल भोगपूर्ती का साधन है। कृष्णा इसका विरोध कर उससे छुटकारÖ ¯ÖÖŸÖß Æ...

***विवाह के प्रति नया दृष्टिकोण :**

विवाह मनुष्य की काम भावना, वंश संवर्धन और सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित रखने का मुख्य कारण माना जाता है।विवाह के द्वारा उत्कृष्ट समाज की स्थापना की कामना की जाती है। माना जाता है कि जब से मानव सभ्य कहलाने लगा होगा तब से शायद विवाह संस्था का अस्तित्व होगा। युग के साथ इसमें परिवर्तन होता रहा है। कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नही है दिल म¸Ö) पुनर्विवाह का समर्थन करती है। वह अनचाहे पति से छुटकारा पाने के लिए तलाक का समर्थन करती है। वह दहेज प्रथा का विरोध करती है।

***†¼Ö¬Ö ¯Ö´Ö ÃÖ²Ö¬Ö :**

प्रेम की त्रिकोणत्मक स्थिति के कारण दाम्पत्य जीवन में विखराव पैदा होता है और पति-पत्नी के संबंध टूट जाते हैं। प्रभा खेतान, मैत्रेयी, पुष्पा आदी ने विवाह बाहय यौन संबंध को स्वीकारने का आग्रह किया है। उनकी दृष्टि में दैहिक पवित्रता,शुचिता का कोई महत्व नहीं है। उन्हाने पति को गुलामी तथा भोगपती का साधन बनने का विरोध किया है। वे अपनी इच्छानुसार जीवन यापन करने के लिए पारिवारीक जीवन को दाँव पर लगाने से नही डरती। वे पति की भोगदासी का विरोध करती है।

***अवैध यौन संबंध :**

यौन भावनाओं की पुर्ति के हेतु वैवाहिक संबंध स्थापित किए जाते है। परंतु कुप्रथाओं के कारण यौन-तृप्ति में असफल सदस्य अवैध संबंधो का शिकार होते है।परिणामत: पारिवारिक जीवन में कलह, संघर्ष, व्देष, ईर्ष्या, की भावना बढती रहती है।यौन संबंधो के दोहरे मानदण्डो के कारण पारिवारिक जीवन मे –गडे उत्पन्न हो रहे है।कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नही है दिल मेरा) के पति के विवाह बाहय पारिवारीक जीवन की नींद को खोखला करते है।उनका पति अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और पद का घमण्ड कर अनेक औरतों के साथ सम्बंध स्थापित करने की कोशिश करता है।

***अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष :**

बदलती सामाजिक, राजकिय परिस्थिति के कारण पारिवारीक जीवन में बिखराव पैदा हो रहा है। आजादी युग मे लेंड सर्वे सेटलमेंट के कारण परिवारों में अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष शुरू हो गया है। गाँव में कोई घर इसकी चपेट से नहीं बच सका।परिवार के सभी प्राणी एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते है। एक एक आदमी अपने आप की किला बना रहा है।सुशीला राय (एक अनपढ कहानी) अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करती है।वह शिक्षा प्राप्त करती है। वह अपने हक के लिए जागरुक बनकर कार्य करती है।वह अपने मार्ग की बाधा के रुप मे अशिक्षा को मानकर शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन उन्नत बनाती है।उनका संपूर्ण जीवन अनिश्चित नारी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

***नारी शिक्षा :**

साठोत्तरी युग की महिला आत्मकथाकार शिक्षा और स्वावलंबन के कारण जागरुक बन गई है।वे स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए प्रयत्नशील है। कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नही है दिल मेरा) मैत्रेयी

पुष्पा (कस्तूरी कुण्डल बसै) प्रभा खेतान (अन्या से अन्यन्या) पद्मा सचदेव (बूँद ²ÖÖ¾Ö>ß) †Öx¤ आत्मकथासारो ने नारी शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को चित्रित किया है।

***रुढी परंपरा का विद्रोह :**

साठोत्तरी महिला आत्मकथाकारों ने नारी शोषण, विकास व्यवस्थावली रुढि परंपराओं का ×¾ारोध किया है।प्रभा खेतान (अन्या से अन्यन्या) रुढी-परंपराओं का त्याग कर अधेड उम्र के डॉक्टर के साथ रहने लगती है। मन्नू भंडारी(एक कहानी यह भी)में परंपरागत रुढि परम्पराओं का विद्रोह कर नई विचारधारा को अपनाया है।

***आर्थिक दुरावस्था :**

महिला आत्मकथाकारों का मानना है कि आर्थिक परावलंबन के कारण नारी को पति और पुरूष सत्ता के आधीन जीवन यापन करना पडता है। पद्मा सचदेव का मानना है कि नारी वास्तविक मुक्ति तो तभी है जब स्त्रियाँ आत्मनिर्भर हो, शिक्षित हो और नालायक पति के आसरे पर न रहें।

***दाम्पत्य जीवन के प्रति नई दृष्टि :**

आजादी के बाद में नारी शिक्षा, नवजागरण, नारी स्वावलंबन, व्यक्तिवादी विचारधरा का परिचय, समाज सुधारकों के प्रयास आदि अनेकानेक कारणों से परम्परागत दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन उपस्थित हो रहा हैं। साठोत्तरी महिला आत्मकथाकारोंने दाम्पत्य जीवन के प्रति नए दृष्टिकोण का परिचय दिया है।कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नही है दिल मेरा), प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या)आदि ने अनचाहे दाम्पत्य जीवन से मुक्त होने का साहस दिखाया है।

***जागरण :**

शिक्षा प्रसार, राजनीतीक आजादी, आर्थिक स्वावलंबन, समाज सुधारकों और नेताओं के प्रयास से युगों युगों से परावलंबन, दमन, शोषण, उत्पीडन ,अत्याचार आदि मे फँसी नारी में

जागृती चेतना निर्माण हो गई है। प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या)लडकी के जन्म का विरोध करने वालों के प्रति आक्रोश प्रकट करती है।वह सामाजिक और पारिवारिक बंधनों को तोडकर नारी को सम्मानपूर्व जीवन जीने के लिए अधिकार देना "ÖÖÆŸÖß Æ...

***अन्याय :**

विषम सामाजिक परिवेश, पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था, नारी का स्वावलंबन, प्रथा-परंपराओं का प्रभाव आदि के बल पर नारी को अन्याय-अत्याचार का शिकार बनाया जाता है।इस ¥ÙÂ™ ÃÖ कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नही है दिल मेरा' आत्मकथा उल्लेखनीय है। लेखिका को भोग्या बनाना या सौदा करना रास नही। उसने दो बार शादी कर संतुलित एवं संस्कारबध्द जीवन जीने की कोशिश की थी।

***Ìम विवाह का समर्थन :**

राजनीतीक जागरण,शिक्षा प्रसार, पाश्चात्य व्यक्तिवादी विचारधारा का प्रभाव, नारी मुक्ति आंदोलन, धार्मिक आंदोलन, आर्थिक स्वावलंबन आदि कारणों से आज की नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे स्वतंत्र बुध्दी से निर्णय ले रही है।प्रभा खेतान(अन्या से अनन्या), रमणिका गुप्ता (हादसे) आदि अनेक महिला आत्मकथाकारोंने प्रेम विवाह का समर्थन करते हुए अनुसरण किया है।प्रभा खेतान ने तो विवाहित पुरूष के साथ प्रेम का रिश्ता जोडा था।

***अवैध यौन संबंध का समर्थन**

साठोत्तरी महिला आत्मकथाकारोंने अवैध यौन संबंध का समर्थन किया है। इनमें प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या) मैत्रेयी पुष्पा (कस्तूरी कुण्डल बसै) आदि आत्मकथाकारों ने अवैध यौन संबंधों को स्वाभाविक मानते हुए समर्थन किया है।उनकी दृष्टि से विवाह बाहय संबंध कोई अपराध नही है।

***समाज सेविका :**

प्राचीन काल से भारतीय समाज में नारी को गौणत्व देकर उसका शोषण किया जा रहा है।आधुनिक युग की नारी अपनी इच्छानुसर जीवन यापन करने की कोशिश करती है। वह रुढी परंपराओं का विशेष कर राजनितिक और सामाजिक में सक्रिय भूमिका अदा कर रही है। प्रभा खेतान सक्रिय रुप में सामाजिक कार्यो मे जुडी थी।उनके द्वारा स्थापित प्रभा खेतान फाऊंडेशन ने कोलकत्ता के समाज में अपना विशेष स्थान बना लिया है।देश भर को साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को इसकी सहायता से समय समय पर बल पहुंचाया है।

षष्ठम अध्याय

^¯ÖÃÖÆÖ¸ü

आधुनिक साहित्य के केंद्र में नारी विमर्श एक मुख्य मुददे के रुप में स्थापित है। रचनात्मक साहित्य और साहित्य समीक्षा में भी इसमे दबाव बढाकर अपनी उपस्थिती दर्ज की है। आत्मकथा साहित्य पहले बहुत विरल था। नारी शिक्षा और पितृसत्तात्मक समाज के क्षरण की प्रक्रिया के प्रारंभ होने की वजह से महिलाएँ लेखन के क्षेत्र मे उतरने लगी और विद्रोह को आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त करने लगी। हिंदी की कथा लेखिकाओं की आत्मकथाओं का अनुशीलन नारी विमर्श के संदर्भ में हमें सामाजिक ढाँचे की जडता और अपर्याप्तता को ठीक ठाक ÃÖ´Ö–ाने में सहायता करता है। नारी का व्यक्तित्व निर्माण पितृसत्तात्मक समाज की संहिताओं के अनुसार होता है। जिसमें पति परमेश्वर और सती सावित्री जैसे महा आदर्शों की “ÖÖ¤ü ×ÃÖÖŸÖÖ¸ü •ÖÖ>ü Æü< है, लेकिन समकालीन शिक्षीत भारतीय नारी इन्ही परंपराओं और पाबंदियों से छुटकारा पाने का प्रयास करती दिखाई देती है। समकालीन महिला साहित्यकारोने साहित्य की सभी ×¾Ö¬ÖÖ†Öë ´Öë अपनी पुरूष प्रधान संस्कृति को छुटकाने वाली पहचान बनाने का प्रयास किया है।

आत्मकथा एक ऐसी विधा है, जो साहित्यकार को जैसा को तैसा पाठकों के सामने प्रकट करती है। यह कलाकार के या साहित्यकार के अंतरंग की –ालक दिखाने की कोशीश करती है। आत्मकथा मूलतः आत्मकपरक विधा है। आत्मकथा व्यक्ति का अत्याधिक विश्वसनीय आत्मदर्शन कराती है।

नारावादी आंदोलन का प्रारंभ सन् १८४८ ई. मे हुआ। न्यूयार्क में एक महिला संमेलन आयोजित कर नारी स्वतंत्रता पर एक घोषणापत्र जारी किया, जिसमें पूर्ण कानूनी समानता, पूर्ण शैक्षणिक और व्यावसायिक अवसर समान मुआवजा मजदूरी कमाने और वोट देने के अधिकार की माँग की गई थी। एशियाई में १९ वी और २० वी सदी में विदेशी शासन और सामंती शासको

की निरंकुशता के विरुध्द उठ खडे हुए आंदोलनों के दरम्यान नारीवादी धारणा को बल x´Ö»ÖÖ... भारत में नारीवादी आंदोलन का प्रारंभ पंडित रमाबाई और सावित्रीबाई फुले व्दारा हुआ। नारीवाद एक विशिष्ट मतवाद है, जो इस सिध्दांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरूष शासित समाज मे निम्न स्थान दिया गया है।उनको पुरूषों के समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

स्वतंत्रता के पूर्व महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कडियाँ' में नारी की दयनीय दशा की ओर ध्यान खींचते हुए पैतृक व्यवस्था के पिंजरे को तोडकर उसमे कैद पंछियो की आजादी की वकालत की। हमारे यहाँ दो तरह का लेखन होता रहा है। पहली तरह के लेखन मे नारी की परंपरागत छवि ही उभरी तथा उनके पास नारी होते हुए भी स्त्री दृष्टि का अभाव था। दूसरे प्रकार का लेखन नारीवादी दृष्टि से युक्त और गहरी पैठ रखता है। नई कहानी आंदोलन के साथ जिन महिला कथा लेखिकाओं के नाम उभरे उनमे यह परावर्तित दृष्टि है वे नारी के अधिकार एवं पुरातन जर्जर मूल्यो से उसकी मुक्ति की बात करने में पूर्णत: नीडर एवं समर्पित है। प्रतिभा अग्रवाल, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, कुसूम अंसल, मैत्रेयी पुष्पा, कौसल्या बैसंत्री, कृष्णा अग्निहोत्री , चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पद्मा सचदेव आदि लेखिकाओं ने नारी की स्वाभाविक प्रकृति को उभारने में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' यह एक औपन्यासिक आत्मकथा है। इसमें लेखिका की आत्मकथा के साथ माँ कस्तुरी की जीवनी भी है। लेखिका का दूसरा भाग 'गुडिया भीतर गुडिया' नाम से आत्मकथा लिखी। इसमें लेखिका ने माँ बेटी के पारस्पारीक संबंधो को स्पष्ट किया है। तथा अपने साहित्यीक जीवन के प्रवास का वर्णन किया है। मन्नू भंडारी ने 'एक कहानी यह भी 'आत्मकथा २००७ में प्रकाशित हुई। इसमें लेखिका ने अपने वंश का तथा उनके पति के साथ आए ÃÖ²Ö-ÖÖ को उजागर किया है।

प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या' के नाम से आत्मकथा लिखी। कलकत्ता में व्यापरिक ¥ÛÂ™ ÃÖ ÃÖ¯Ö®Ö ÃÖ´Ö–ो जाने वाले खेतान परिवार का वर्णन करते हुए अपने बडे तथा विवाहित

›ÖŒ™¸¡ Ãì प्रेम करती है। इसमें आत्मनिर्भरता लेखिका के जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। चंद्रकिरण सौनेरेक्सा की 'पिंजरे की मैन'आत्मकथा सर्वश्रेष्ठ है। इसमें इन्होनें पितृसत्तात्मक परिवार तथा भारतीय परंपराओं को निभानेवाली नारी को किस प्रकार अपनी इच्छाओं को दबाकर रहना पडता है, तथा पति के अत्याचार को किस प्रकार सहना पडता है आदि का वर्णन किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'और ... और... औरत' प्रकाशित हुई।उनकी पितृसत्ताक नैतिक प्रतिमानो की धज्जियाँ उडाकर रख देती है। लेखिकाने साहित्यिक राजनीति की चर्चा भी की है। सुशिला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा २०१० में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा एक दलित नारी की दारुण यातना की कहानी हीं नही कहती, उस वर्णव्यवस्था अमानवीय स्वरुप के रेशे रेशे में से पाठकों को परिचित कराती है, जिसने करोंडो इंसानों की जिंदगी मे जिंदगी घोल रखा है।

अंत मे हम कह सकते है कि आत्मकथा यह आधुनिक युग की विधा है। उसका विकास आधुनिक युग मे ही हुआ है, बीसवी सदी के अंत तक बहुत कम मात्रा मे महिलाओं के व्दारा आत्मकथा लिखी जाती थी। लेकिन इक्किसवी सदी बहुत सारी महिला साहित्यकार अपने जीवन की सच्ची कहानी आत्मकथाओं के माध्यम से स्पष्ट कर रही है। भारत जैसे, परंपरावादी देश में तो नारी के लिए सेन्सॉरशिप होती है। ऐसे समाज मे रहकर अपने बारे मे सबकुछ लिखना आसान काम नहीं है। जहाँ पुरूषों के साथ बोलना मना है, यौन संबंधी बाते करना जहाँ पाप सम–ÖÖ •ÖÖŸÖÖ Æ, वहाँ अपने बारे में सब कुछ लिखना आसान नहीं है, मगर यह स्त्री मुक्ति का आयाम है।

आधार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

1.	डॉ. नारायण शर्मा	:	हिंदी आत्मकथा
2.	कृष्ण अग्निहोत्री	:	लगता नहीं है दिल मेरा
3.	डॉ. प्रभा खेतान	:	अन्या से अनन्या
4.	गुप्ता रमणिका	:	Æü¤ü Ãü
5.	डॉ. त्रिगुणायत गोविंद	:	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत
6.	बजाज जानकीदेवी	:	मेरी जीवन यात्रा
7.	³ü>ü¸üß ´ü®ü	:	एक कहानी यह भी
8.	मैत्रेयी पुष्पा	:	कस्तुरी कुण्डल बसै
			गुडिया भीतर गुडिया
9.	डॉ. विश्वबंधु व्यथित	:	हिंदी का आत्मकथा साहित्य
10.	Ãü“ü¤ü¾ü ¯ü¤ü´üü	:	²ü¤ü ²üü¾ü>üß
11.	सिंह कमलेश	:	हिंदी आत्मकथा
12.	सुशिला टाकभोरे	:	शिकंजे का दर्द

....

हिंदी शब्द कोश

बृहत हिंदी कोश

हिंदी विश्वकोश

आदर्श हिंदी कोश

हिंदी साहित्य कोश

अंग्रेजी शब्द कोश

Oxford Dictionary

Encyclospidia of Britannica

¯Ö¡Ö - पत्रिकाएँ

1. ÆÃÖ

२. वागर्थ

3. ´Ö¬Ö´Ö×ÝÖ

४. आजकल